Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
July to September 2026, E-Journal, Vol. I, Issue LV (55), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

भाषा एवं लिपि – ज्ञान परम्परा का आधार

बीरेंद्र सिंह कुशवाह*

* सहायक प्राध्यापक (इतिहास) शास. महाविद्यालय, बदरवास, शिवपुरी (म.प्र.) भारत

शोध सारांश – भारतीय ज्ञान परम्परा विश्व की प्राचीन एवं समृद्ध ज्ञान–परम्पराओं में से एक है, जिसके संरक्षण, संवर्धन और पीढ़ी–दर–पीढ़ी हस्तांतरण मेंभाषा एवं लिपि की केंद्रीय भूमिकारही है। भाषा केवल विचारों, भावनाओं एवं अनुभवों की अभिव्यक्ति का माध्यम नहीं है, बल्कि यह किसी समाज की सांस्कृतिक स्मृति, बौद्धिक विरासत और सामूहिक चेतना को संरक्षित करने का प्रभावी साधन भी है। दूसरी ओर, लिपि भाषा को स्थायित्व प्रदान करते हुए ज्ञान को लिखित एवं दस्तावेजीकृत स्वरूप प्रदान करती है।भारतीय परिप्रेक्ष्य में वैदिक मौखिक परम्परा से लेकर पाण्डुलिपि–परम्परा और आधुनिक डिजिटल अभिलेखीकरण तक ज्ञान के संरक्षण और संप्रेषण की प्रक्रिया में भाषा एवं लिपि निरंतर महत्वपूर्ण रही हैं। संस्कृत, पालि, प्राकृत, तमिल तथा विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं ने भारतीय ज्ञान के विविध आयामों को अभिव्यक्ति प्रदान की। इसी प्रकार ब्राह्मी, खरोष्ठी, शारदा, ग्रन्थ, देवनागरी तथा अन्य लिपियों ने ज्ञान–साहित्य को लिखित रूप में संरक्षित करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।प्रस्तुत शोध–पत्र में भाषा एवं लिपि के ऐतिहासिक विकास, भारतीय ज्ञान परम्परा के संरक्षण एवं संप्रेषण में उनकी भूमिका, मौखिक एवं लिखित परम्पराओं के अंतर्संबंध, औपनिवेशिक काल में भाषाई एवं लिपिगत परिवर्तन तथा समकालीन समय में इनके संरक्षण एवं पुनरोद्धार के प्रयासों का विश्लेषण किया गया है। अध्ययन का उद्देश्य यह स्पष्ट करना है कि भाषा एवं लिपि केवल संप्रेषण के साधन नहीं, बल्कि भारतीय सभ्यता की बौद्धिक निरंतरता, सांस्कृतिक अस्मिता और सामूहिक स्मृति के आधारभूत तत्व हैं।

शब्द कुंजी – भाषा, लिपि, भारतीय ज्ञान परम्परा, सांस्कृतिक विरासत,पाण्डुलिपि, ज्ञान–संरक्षण।

प्रस्तावना – भारतीय संस्कृति विश्व की प्राचीनतम एवं निरंतर विकसित होने वाली सांस्कृतिक परम्पराओं में से एक है। इसकी विशिष्टता केवल इसकी प्राचीनता में नहीं, बल्कि इसकीज्ञान–सृजन, ज्ञान–संरक्षण एवं ज्ञान–संप्रेषण की निरंतरतामें निहित है। भारतीय ज्ञान परम्परा ने दर्शन, धर्म, साहित्य, व्याकरण, गणित, खगोल विज्ञान, आयुर्वेद, चिकित्सा, राजनीति, अर्थशास्त्र, कला तथा नैतिक चिंतन जैसे विविध क्षेत्रों में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इस विशाल बौद्धिक विरासत के संरक्षण और पीढ़ी–दर–पीढ़ी हस्तांतरण में भाषा एवं लिपि की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही है।भाषा मानव के विचारों, भावनाओं, अनुभवों और ज्ञान को अभिव्यक्त करने का प्रमुख माध्यम है, जबकि लिपि भाषा को स्थायित्व और दृश्य स्वरूप प्रदान करती है। इस दृष्टि से भाषा को ज्ञान कीजीवंत अभिव्यक्तितथा लिपि को उसकेस्थायी अभिलेखीकरण का माध्यममाना जा सकता है। भारतीय परम्परा में 'वाव' को विशेष दार्शनिक एवं आध्यात्मिक महत्तव प्रदान किया गया है। वैदिक साहित्य में वाक् को सृजनात्मक एवं ज्ञानात्मक शक्ति के रूप में प्रतिष्ठित किया गया है।

भारतीय ज्ञान परम्परा के विकास में संस्कृत की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही है। वेद, उपनिषद, ब्राह्मण ग्रन्थ, आरण्यक, दर्शन, व्याकरण, महाकाव्य, आयुर्वेद, गणित, ज्योतिष और अर्थशास्त्र जैसे अनेक ज्ञान–विषयक ग्रन्थों की रचना एवं परम्परा संस्कृत के माध्यम से विकसित हुई। इसी प्रकार पालि और प्राकृत भाषाओं ने बौद्ध एवं जैन ज्ञान–परम्पराओं के प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान दिया। दक्षिण भारत में तमिल तथा बाद में विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं ने स्थानीय ज्ञान, साहित्य और सांस्कृतिक परम्पराओं को समृद्ध किया।अत: भाषा एवं लिपि को भारतीय ज्ञान परम्परा के केवल संप्रेषणात्मक साधन के रूप में देखना पर्याप्त नहीं है। वे भारतीय सभ्यता कीसांस्कृतिक स्मृति, बौद्धिक निरंतरता और ज्ञानात्मक पहचानके महत्वपूर्ण आधार हैं।

भारतीय ज्ञान परम्परा में भाषा एवं लिपि की आधारभूत भूमिका– भारतीय ज्ञान परम्परा के निर्माण एवं विकास में भाषा और लिपि का संबंध अत्यंत गहरा और परस्पर पूरक रहा है। भाषा ने ज्ञान को अभिव्यक्ति प्रदान की, जबकि लिपि ने उसे स्थायित्व एवं व्यापक प्रसार का माध्यम प्रदान किया।भारतीय परम्परा में ज्ञान के संरक्षण की प्रारंभिक व्यवस्था मुख्यत:श्रुति एवं स्मृतिपर आधारित थी। वैदिक मंत्रों का संरक्षण उच्चारण, स्वर, क्रम और पुनरावृत्ति की अत्यंत विकसित मौखिक तकनीकों के माध्यम से किया गया। यह मौखिक परम्परा इस बात का महत्वपूर्ण उदाहरण है कि किसी ज्ञान–परम्परा का संरक्षण केवल लिखित माध्यम पर निर्भर नहीं होता, बल्कि प्रशिक्षित स्मृति, अनुशासन और गुरु–शिष्य परम्परा भी इसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।समय के साथ लेखन–प्रणाली के विकास ने ज्ञान–संरक्षण की प्रक्रिया को नया आयाम प्रदान किया। लिपियों के विकास ने मौखिक ज्ञान को लिखित स्वरूप में संरक्षित करने की संभावनाएँ बढ़ाईं और पाण्डुलिपि–परम्परा को विकसित किया।

बौद्धिक विरासत के माध्यम के रूप में भाषा– भारतीय ज्ञान परम्परा बहुभाषिक एवं बहुसांस्कृतिक स्वरूप वाली रही है। संस्कृत, पालि, प्राकृत, तमिल तथा विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं ने अलग–अलग कालखंडों में ज्ञान–सृजन एवं संप्रेषण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

1. **संस्कृत की भूमिका** –संस्कृत भारतीय दार्शनिक, धार्मिक, साहित्यिक एवं वैज्ञानिक परम्पराओं की प्रमुख भाषाओं में रही है। वेद, उपनिषद, पुराण, दर्शन, व्याकरण, आयुर्वेद, गणित, ज्योतिष तथा अर्थशास्त्र से संबंधित विशाल साहित्यिक परम्परा संस्कृत में उपलब्ध है। पाणिनि कीअष्टाध्यायीभारतीय व्याकरणिक चिंतन की उन्नत परम्परा का महत्वपूर्ण उदाहरण है।

2. **पालि एवं प्राकृत की भूमिका** – बौद्ध एवं जैन परम्पराओं के विकास में पालि एवं प्राकृत भाषाओं का महत्वपूर्ण योगदान रहा। इन भाषाओं ने ज्ञान को व्यापक सामाजिक समूहों तक पहुँचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और भारतीय ज्ञान परम्परा को अधिक बहुलतापूर्ण स्वरूप प्रदान किया।

3. **क्षेत्रीय भाषाओं का योगदान** – भारतीय भाषाई परम्परा का विकास केवल संस्कृत तक सीमित नहीं रहा। तमिल, कन्नड़, तेलुगु, मलयालम, मराठी, बंगाली, असमिया, ओड़िया, हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं ने साहित्य, दर्शन, भक्ति, लोकज्ञान, इतिहास एवं सामाजिक चिंतन के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

लिपि का विकास और ज्ञान का संरक्षण– लिपि का विकास मानव सभ्यता के ज्ञान–संरक्षण की दिशा में एक महत्वपूर्ण चरण था। भारतीय उपमहाद्धीप में लेखन–परम्परा के इतिहास को समझने के लिए विभिन्न पुरातात्तिवक एवं अभिलेखीय स्रोत महत्वपूर्ण हैं। आधुनिक भारतीय भाषाओं की अनेक लिपियाँ ऐतिहासिक रूप से विकसित लेखन परम्पराओं से संबंधित हैं।लेखन के लिए ताड़पत्र, भोजपत्र, कागज तथा अन्य माध्यमों का प्रयोग किया गया। पाण्डुलिपियों के माध्यम से धार्मिक, दार्शनिक, वैज्ञानिक, चिकित्सकीय, साहित्यिक और प्रशासनिक ज्ञान को संरक्षित किया गया। इस प्रकार लिपि ने मौखिक ज्ञान को स्थायी अभिलेख में रूपांतरित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

मौखिक परम्परा और गुरु–शिष्य परम्परा– भारतीय ज्ञान परम्परा की एक विशिष्ट विशेषता इसकी विकसितमौखिक परम्पराहै। वैदिक साहित्य का संरक्षण मुख्यत: गुरु–शिष्य परम्परा के माध्यम से हुआ। शिष्य गुरु से सुनकर, दोहराकर और अभ्यास के माध्यम से ज्ञान को आत्मसात करता था।मौखिक परम्परा में केवल विषय–वस्तु ही नहीं, बल्कि उच्चारण, स्वर, लय और पाठ–क्रम की शुद्धता पर भी विशेष ध्यान दिया जाता था। इस कारण भारतीय परम्परा में स्मृति और मौखिक संप्रेषण की अत्यंत विकसित पद्धतियाँ विकसित हुईं।हालाँकि, मौखिक और लिखित परम्पराओं को एक–दूसरे का विरोधी मानना उचित नहीं है। दोनों ने भारतीय ज्ञान परम्परा में परस्पर पूरक भूमिका निभाई। मौखिक परम्परा ने ज्ञान की जीवंतता एवं निरंतरता बनाए रखी, जबकि लेखन और लिपि ने उसके दस्तावेजीकरण एवं दीर्घकालिक संरक्षण की संभावनाओं को बढ़ाया।

पाण्डुलिपि परम्परा और ज्ञान–संरक्षण– भारतीय ज्ञान परम्परा के संरक्षण में पाण्डुलिपियों का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। विभिन्न क्षेत्रों में स्थानीय परिस्थितियों के अनुसार ताड़पत्र, भोजपत्र और बाद में कागज पर पाण्डुलिपियाँ तैयार की गईं।इन पाण्डुलिपियों में दर्शन, धर्म, साहित्य, चिकित्सा, ज्योतिष, गणित, व्याकरण, वास्तु, संगीत और प्रशासन से संबंधित विविध प्रकार का ज्ञान संरक्षित रहा। तक्षशिला, नालंदा तथा अन्य प्राचीन शिक्षा–केंद्र भारतीय ज्ञान–संस्थानों की उस परम्परा का प्रतिनिधित्व करते हैं जहाँ ज्ञान का सृजन, अध्ययन, अध्यापन एवं संरक्षण संस्थागत रूप से विकसित हुआ।पाण्डुलिपियों का अध्ययन केवल उनके विषय–वस्तु तक सीमित नहीं है। उनकी भाषा, लिपि, लेखन शैली, सामग्री, तिथि और संरक्षण–परम्परा के अध्ययन से उस समय की सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिस्थितियों को समझने में भी सहायता मिलती है।

भाषा, लिपि और भारतीय सांस्कृतिक अस्मिता– भाषा और लिपि किसी समाज की सांस्कृतिक पहचान के महत्वपूर्ण घटक होते हैं। भाषा के माध्यम से किसी समाज की स्मृतियाँ, लोकपरम्पराएँ, विश्वास, जीवन–पद्धति और मूल्य एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक हस्तांतरित होते हैं।भारतीय संदर्भ में भाषाई विविधता सांस्कृतिक बहुलता की अभिव्यक्ति है। विभिन्न भारतीय भाषाओं में उपलब्ध साहित्य एवं लोकपरम्पराएँ भारत की सामाजिक–सांस्कृतिक विविधता को अभिव्यक्त करती हैं।विशेष रूप से जनजातीय एवं लोक समुदायों की भाषाएँ और मौखिक परम्पराएँ स्थानीय पर्यावरण, औषधीय ज्ञान, कृषि, जल–संरक्षण, जैव–विविधता तथा सामाजिक जीवन से संबंधित महत्वपूर्ण पारंपरिक ज्ञान का भंडार हैं। अत: भाषाओं और लिपियों का संरक्षण केवल भाषाई संरक्षण नहीं, बल्कि अमूर्त सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण का भी महत्वपूर्ण माध्यम है।

औपनिवेशिक काल और भारतीय भाषाई परम्परा– औपनिवेशिक काल में भारत की शिक्षा, प्रशासन और ज्ञान–व्यवस्था में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए। अंग्रेजी भाषा को प्रशासन एवं आधुनिक शिक्षा के प्रमुख माध्यम के रूप में बढ़ावा मिलने से भारतीय भाषाओं की पारंपरिक ज्ञान–व्यवस्थाओं पर प्रभाव पड़ा।औपनिवेशिक शिक्षा व्यवस्था ने आधुनिक विज्ञान, तर्क, मुद्रण एवं वैश्विक ज्ञान के प्रसार के लिए नए अवसर उपलब्ध कराए, लेकिन दूसरी ओर पारंपरिक भारतीय ज्ञान–प्रणालियों, स्थानीय भाषाओं और स्वदेशी शैक्षिक संस्थानों की स्थिति में भी परिवर्तन आया।आधुनिक शिक्षा और वैश्विक ज्ञान से प्राप्त उपलब्धियों को स्वीकार करते हुए भारतीय भाषाओं एवं ज्ञान–परम्पराओं के संरक्षण और पुनर्पाठ की आवश्यकता आज भी बनी हुई है।

आधुनिक काल में भाषा एवं लिपि का पुनरोद्धार– समकालीन समय में भारतीय भाषाओं, लिपियों और पाण्डुलिपियों के संरक्षण की दिशा में अनेक संस्थागत प्रयास किए जा रहे हैं। पाण्डुलिपियों का सूचीकरण, संरक्षण, डिजिटलीकरण, अनुवाद और वैज्ञानिक अध्ययन इस दिशा में महत्वपूर्ण कदम हैं।डिजिटल प्रौद्योगिकी ने प्राचीन पाण्डुलिपियों एवं दुर्लभ दस्तावेजों को संरक्षित करने तथा उन्हें व्यापक शोध समुदाय तक पहुँचाने की नई संभावनाएँ उत्पन्न की हैं। ब्राह्मी, शारदा, मोढी, ग्रन्थ आदि ऐतिहासिक लिपियों के अध्ययन एवं प्रशिक्षण से संबंधित प्रयास भारतीय भाषाई विरासत के पुनर्पाठ में उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं।इसी प्रकार राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र तथा अन्य संस्थानों द्वारा पाण्डुलिपियों के संरक्षण एवं अध्ययन की दिशा में किए जा रहे प्रयास महत्वपूर्ण हैं।

भारतीय ज्ञान परम्परा और समकालीन शिक्षा– वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में भारतीय ज्ञान परम्परा को समझने के लिए भाषा एवं लिपि के अध्ययन को उचित स्थान दिया जाना आवश्यक है। भारतीय ज्ञान परम्परा को केवल प्राचीन ग्रन्थों के अध्ययन तक सीमित न रखकर उसे आधुनिक शिक्षा, अनुसंधान और सामाजिक विकास के संदर्भ में पुनर्पाठित किया जाना चाहिए।गुरु–शिष्य परम्परा में निहित संवाद, अनुशासन, अनुभवात्मक अधिगम और मूल्य–आधारित शिक्षा के तत्व आधुनिक शिक्षा में उपयोगी हो सकते हैं। इसी प्रकार भारतीय भाषाओं के माध्यम से स्थानीय ज्ञान,

लोकज्ञान, पारंपरिक पर्यावरणीय ज्ञान तथा सांस्कृतिक विरासत का अध्ययन विद्यार्थियों को अपनी सामाजिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि से जोड़ सकता है।मध्यप्रदेश में भारतीय ज्ञान परम्परा से संबंधित शैक्षणिक पहलों के माध्यम से विद्यार्थियों तक भारतीय ज्ञान, संस्कृति, नैतिक मूल्यों, ध्यान, स्मृति एवं अनुभवात्मक अधिगम की अवधारणाओं को पहुँचाने के प्रयास किए जा रहे हैं। इन प्रयासों में भाषा एवं लिपि के अध्ययन को भी महत्वपूर्ण स्थान दिया जाना आवश्यक है।

शोध-पद्धति- प्रस्तुत अध्ययन मुख्यत:साहित्य-आधारित एवं वर्णनात्मक-विश्लेषणात्मक अध्ययनहै। शोध के लिए प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों प्रकार के स्रोतों का उपयोग किया गया है।प्राथमिक स्रोतों के अंतर्गत विषय से संबंधितसाक्षात्कार, समूह-चर्चा एवं चयनित केस स्टडीका उपयोग किया गया है। द्वितीयक स्रोतों के अंतर्गत प्रकाशित ग्रन्थ, शोध-पत्र, शोध-पत्रिकाएँ, विद्वत् लेख, पाण्डुलिपि-अध्ययन, ऐतिहासिक एवं शैक्षणिक सामग्री तथा उपलब्ध डिजिटल स्रोतों का अध्ययन किया गया है।अध्ययन में ऐतिहासिक एवं विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण अपनाते हुए भाषा एवं लिपि के विकास तथा भारतीय ज्ञान परम्परा के संरक्षण, संवर्धन एवं संप्रेषण में उनकी भूमिका का विश्लेषण किया गया है।

प्रमुख निष्कर्ष - अध्ययन से निम्नलिखित प्रमुख निष्कर्ष प्राप्त होते हैं:

1. भाषा भारतीय ज्ञान परम्परा की अभिव्यक्ति का मूल माध्यम रही है, जिसके द्वारा विचार, अनुभव, दर्शन और सांस्कृतिक मूल्यों का संप्रेषण हुआ।
2. लिपि ने भाषा एवं ज्ञान को स्थायित्व प्रदान कियाऔर मौखिक परम्पराओं के साथ मिलकर ज्ञान-संरक्षण की प्रक्रिया को अधिक प्रभावी बनाया।
3. भारतीय ज्ञान परम्परा का स्वरूपबहुभाषिक एवं बहुलतापूर्णरहा है। संस्कृत, पालि, प्राकृत, तमिल तथा विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं ने इसके विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया।
4. गुरु-शिष्य परम्परा एवं मौखिक ज्ञान-संरक्षण पद्धतियाँभारतीय ज्ञान-परम्परा की विशिष्ट विशेषताएँ रही हैं।
5. पाण्डुलिपियों ने दर्शन, साहित्य, चिकित्सा, गणित, ज्योतिष, व्याकरण और अन्य ज्ञान-विषयों के संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
6. भाषाई एवं लिपिगत विविधता भारत कीसांस्कृतिक बहुलता और सामूहिक स्मृतिका महत्वपूर्ण आधार है।
7. आधुनिक डिजिटल तकनीक प्राचीन भाषाओं, लिपियों एवं पाण्डुलिपियों केसंरक्षण, डिजिटलीकरण और वैश्विक प्रसारके लिए नई संभावनाएँ प्रस्तुत करती है।

निष्कर्ष एवं सुझाव- भारतीय ज्ञान परम्परा के विकास, संरक्षण एवं निरंतरता में भाषा एवं लिपि की भूमिका आधारभूत एवं बहुआयामी रही है। भाषा ने ज्ञान को अभिव्यक्ति प्रदान की, जबकि लिपि ने उसे स्थायी स्वरूप देकर भावी पीढ़ियों तक पहुँचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वैदिक मौखिक परम्परा, गुरु-शिष्य परम्परा, पाण्डुलिपि-परम्परा तथा आधुनिक डिजिटल अभिलेखीकरणकृइन सभी चरणों में भाषा एवं लिपि ज्ञान के संरक्षण के महत्वपूर्ण साधन रहे हैं।समकालीन वैश्वीकरण के दौर में अंग्रेजी सहित वैश्विक भाषाओं का ज्ञान आवश्यक है, किंतु इसके साथ भारतीय भाषाओं एवं उनकी विविध लिपियों के संरक्षण और विकास पर भी समान रूप से ध्यान दिया जाना चाहिए। आधुनिक विज्ञान, तकनीक एवं वैश्विक ज्ञान के साथ भारतीय भाषाओं एवं ज्ञान परम्पराओं का समन्वय शिक्षा को अधिक बहुआयामी और संदर्भ-सापेक्ष बना सकता है।भारतीय ज्ञान परम्परा को आधुनिक शिक्षा में समाविष्ट करते समय उसे केवल अतीत के गौरव के रूप में प्रस्तुत करने के बजाय आलोचनात्मक, वैज्ञानिक एवं शोध परक दृष्टिकोण के साथ अध्ययन किया जाना चाहिए। इससे परम्परा और आधुनिकता के बीच सार्थक संवाद स्थापित किया जा सकता है।

अत: आवश्यक है कि-

1. भारतीय भाषाओं के अध्ययन एवं अध्यापन को प्रोत्साहित किया जाए।
2. विलुप्त प्राय एवं अल्पप्रचलित भाषाओं के संरक्षण के लिए दस्तावेजीकरण एवं डिजिटल अभिलेखीकरण किया जाए।
3. प्राचीन लिपियों के अध्ययन हेतु प्रशिक्षण एवं प्रमाण-पत्र आधारित कार्यक्रम विकसित किए जाएँ।
4. पाण्डुलिपियों के वैज्ञानिक संरक्षण, डिजिटलीकरण एवं अनुवाद को बढ़ावा दिया जाए।
5. भारतीय भाषाओं में उच्च शिक्षा एवं शोध-सामग्री की उपलब्धता बढ़ाई जाए।
6. स्थानीय एवं जनजातीय समुदायों के मौखिक ज्ञान को दस्तावेजीकृत किया जाए।
7. भारतीय ज्ञान परम्परा के अध्ययन में अंतर्विषयक अनुसंधान को प्रोत्साहित किया जाए।
8. भाषा एवं लिपि को सांस्कृतिक अध्ययन के साथ-साथ आधुनिक सूचना एवं डिजिटल तकनीक से जोड़ा जाए।
9. विद्यार्थियों में भाषा, संस्कृति, नैतिक मूल्यों और ज्ञान परम्परा के प्रति आलोचनात्मक एवं संवेदनशील दृष्टिकोण विकसित किया जाए।

इस प्रकार भाषा एवं लिपि को भारतीय ज्ञान परम्परा केज्ञानात्मक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक आधारके रूप में समझते हुए उनके संरक्षण एवं विकास को शिक्षा, अनुसंधान और सांस्कृतिक नीति का महत्वपूर्ण अंग बनाया जाना चाहिए। भाषा एवं लिपि का संरक्षण वस्तुत: केवल शब्दों और लेखन प्रणालियों का संरक्षण नहीं, बल्किसामूहिक स्मृति, सांस्कृतिक अनुभव और ज्ञान की निरंतरता का संरक्षणहै।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. पाणिनि -अष्टाध्यायी।
2. शर्मा, सत्यनारायण -भारतीय भाषा और लिपि का इतिहास।
3. हजारीप्रसाद द्विवेदी -भारतीय संस्कृति के स्वरूप और परम्परा।
4. शर्मा, के. एन. -भारतीय ज्ञान परम्परा का ईश्वरीय आधार।
5. ऋग्वेद संहिता, मण्डल 10।
6. मिश्रा, ब्रजेश (2024) - 'चिकित्सा पाण्डुलिपियों के अध्ययन में लिपि और भाषाओं पर एक समीक्षा।'
7. हाय, के. पे. (2022) - 'मन, अनुभूति और संस्कृति की गुप्त प्रेरणा के रूप में स्क्रिप्ट प्रभाव।'
8. Language and Scripts, Academia.edu.
9. भारत सरकार, शिक्षा मंत्रालय - भारतीय भाषाओं एवं शिक्षा से संबंधित दस्तावेज।
10. नेशनल सेंटर फॉर बायोटेक्नोलॉजी इन्फॉर्मेशन (NCBI), उपलब्ध शोध सामग्री और लेख।